विचार बिन्दु

अन्याय को मिटाओ लेकिन अपने आप को मिटाकर नहीं। –प्रेमचंद

न्याय की लंबी डगर: निचली अदालतों में तारीखों पर तारीखें

भारतीय न्यायपालिका केवल उच्च न्यायालयों और सर्वोच्च न्यायालय ही नहीं है। हालांकि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता कि न्याय के इन्हीं उच्च स्तरों से अधिकांश विधिक ज्ञान की शुरुआत होती है। शायद ऐसा इसलिए है क्योंकि इन न्यायालयों में न्यायमूर्ति संवैधानिक सिद्धांतों की बारीकियों का अन्वेषण करते हैं, मौलिक अधिकारों के जटिल अंतर्संबंधों की व्याख्या करते हैं, और ऐसे निर्णय सुनाते हैं जो विधिक और लोकजगत दोनों पर अपनी छाप छोड़ते हैं। लेकिन यह भी सच है कि न्याय का असली संघर्ष निचली अदालत अर्थात 'ट्रायल कोर्ट' से शुरू होता है। भीड़भाड़ वाली मजिस्ट्रेटी अदालतों और कम रोशनी वाली सिविल अदालतों में न्याय की यह प्रक्रिया हमेशा एक मोहर और एक तारीख से शुरू होती है, तथा तारीख पर तारीख का किस्सा बन कर बरसों चलती रहती है। देश के अधिकांश मुकदमों के लिए ये निचली अदालतें प्राय: पहला संपर्क बिंदु होती हैं। लेकिन अनोखी बात यह है कि यह व्यवस्था इस तरह से है कि एक भी न्यायाधीश किसी मामले की शुरुआत से अंत तक सुनवाई नहीं कर पाता है। उनका तबला होता रहता है। न्याय में अत्यधिक देरी भारतीय न्यायिक प्रशासन की सबसे बुनियादी समस्याओं में से एक है। लेकिन उससे निबटने के लिए ट्रायल कोर्ट के बारे में देश में विश्वसनीय, व्यापक और मानकीकृत आंकड़ों का भी अभाव है। जैसे भारत को कितने न्यायाधीशों की ज़रूरत है? जानकार लोग कहते हैं कि भारत के न्यायिक आंकडे न केवल खराब हैं, बल्कि वे संरचनात्मक रूप से भी भ्रामक हैं। इसका प्रमाण न्यायिक पारदर्शिता की एक महत्वपूर्ण पहल राष्ट्रीय न्यायिक डेटा ग्रिड (एनजेडीजी) है, जिसकी कार्यप्रणाली की आलोचनाएं होती रहती हैं। जैसे उसके आंकड़ों में दो मिनट के प्रक्रियात्मक आदेश से निपटाए गए मामले को भी पूरी सुनवाई के बाद समाप्त हुए मामले के बराबर गिना जाता है। आलोचक कहते हैं कि न्याय विभाग का डेटा विंग ऐसे अधिकारियों से भरा पड़ा है जिनकी न तो कोई न्यायिक पृष्ठभूमि है और न ही अनुभवजन्य विशेषज्ञता है और न न्यायिक सूचना विज्ञान का कोई औपचारिक प्रशिक्षण।

भारत की न्याय व्यवस्था पर जब भी चर्चा होती है तो सबसे बड़ा आरोप उस पर यही लगता है कि यहां न्याय देर से मिलता है, और कई बार तो इतनी देर से मिलता है कि उसका अर्थ ही बदल जाता है। आम नागरिक की अदालतों के प्रति सबसे बड़ी शिकायत यही है कि हर सुनवाई पर तारीख़ पर तारीख़ मिलती है, और अंतिम फ़ैसला आने में बरसों बीत जाते हैं। निचली अदालतें देश की न्याय व्यवस्था की नींव हैं और उन्हीं के भरोसे आम आदमी न्याय पाने के लिए अदालत का दरवाज़ा खटखटाता है। न्याय मिलने में लंबे विलंब के दुष्परिणाम से भी सभी वाक़िफ़ हैं?

फैसलों में देरी का कारण लंबित मामलों का बोझ बताया जाता है। भारत की अदालतों में लटके पड़े मामलों की संख्या चौंकाने वाली है। विभिन्न विधिक संगठनों की रिपोर्टें बार-बार चेतावनी देती रही हैं कि देशभर की अदालतों में करोड़ों मामले लंबित हैं। इनमें से लगभग 70 प्रतिशत से अधिक निचली अदालतों में अटके हुए हैं। कारण साफ है-केवल सीमित संख्या में जज और कर्मचारी हैं, जबकि मुकदमों की संख्या लगातार बढ़ती जाती है। भारत में औसतन प्रति दस लाख आबादी पर केवल 20 न्यायाधीश उपलब्ध हैं, जबकि अंतरराष्ट्रीय मानक इसके कई गुना अधिक का सुझाव देता है। यानी, जजों की संख्या मुकदमों के बोझ के हिसाब से बेहद कम है। जब एक जज को रोज़ाना दर्जनों मुकदमों की सुनवाई करनी पड़ती है, तो अनिवार्य रूप से अधिकांश मामलों में केवल अगली तारीख़ देना ही संभव हो पाता है। भारतीय न्याय प्रणाली में प्रक्रियागत जटिलताएं भी कम नहीं हैं। भारतीय दंड संहिता, सिविल प्रक्रिया संहिता और दंड प्रक्रिया संहिता जैसे कानूनों में प्रक्रियाएं इतनी जटिल और लंबी हैं कि उनका पालन करने में ही कई बार वर्षों खप जाते हैं। हालांकि इन कानूनों में बदलाव लाये गये हैं किन्तु उनका असर होने लगा हो ऐसा संकेत कहीं से नहीं मिल रहा है। गवाहों की पेशी, सबूतों का संग्रह, पुलिस रिपोर्ट, सरकारी विभागों से अनुमति या कागज़ात, विशेषज्ञ राय और अपील की प्रक्रिया-ये सब मिलकर एक मुकदमे को लंबा खींच देते हैं। सिविल मामलों में तो स्थिति और भी विकट है। ज़मीन-जायदाद, पारिवारिक विवाद, या अनुबंधों से जुड़े मामलों में बार-बार दस्तावेज़ों की मांग, गवाहों की अनुपस्थिति और अपील की अंतहीन श्रृंखला न्याय की गति को और धीमा कर देती है। न्याय प्रक्रिया में देरी के लिए वकीलों और पक्षकारों की भूमिका को भी अनदेखा नहीं किया जा सकता है। कई बार देरी का बड़ा कारण वकीलों और पक्षकारों का रवैया भी होता है। पक्षकार जानबूझकर सुनवाई टालने की कोशिश करते हैं ताकि मामला लंबा खिंचे और सामने वाले को थका दिया जाए। कई वकील भी तारीख़ पर तारीख़ लेने की नीति अपनाते हैं, क्योंकि लंबा मुकदमा उनके लिए आर्थिक रूप से लाभकारी साबित होता है। इसके अतिरिक्त, गवाहों की अनुपस्थिति या पुलिस द्वारा समय पर चार्जशीट दाख़िल न करना भी मामलों को आगे बढ़ने से रोक देता है। कई बार गवाहों को धमकाने या उन्हें मैनेज करने के मामले भी सामने आते हैं, वे पलट जाते हैं या पेश ही नहीं होते। ऐसे में अदालत को मजबूर होकर अगली तारीख़ देनी पड़ती है।

न्याय में देरी के दुष्परिणाम पर कम ही विचार हुआ है। न्याय अर्थहीन हो जाता है जब फैसला आने में बीस-बीस साल लग जाते हैं। तो कई बार जब पीड़ित पक्ष ही जीवित नहीं रहता है तब फैसला केवल कागज़ी महत्व का रह जाता है। इसीलिए लोग अदालतों से निराश होकर न्याय के लिए अन्य रास्ते अपनाने लगते हैं। यह लोकतंत्र और विधि के शासन के लिए खतरनाक होता है।

जानकार लोग देरी के लिए न्याय प्रणाली में तकनीकी ढांचे की कमी को भी इंगित करते हैं। आज जब डिजिटल क्रांति हर क्षेत्र में पहुंच चुकी है, तब भी निचली अदालतों की कार्यप्रणाली पूरी तरह तकनीकी रूप से आधुनिक नहीं हो सकी है। ई-कोर्ट और वर्चुअल हियरिंग की पहल उच्च न्यायालयों में तो हुई है, लेकिन यह अभी पूरी तरह ज़मीनी स्तर या निचली अदालतों तक नहीं पहुंची है। निचली अदालतों में कंप्यूटर, इंटरनेट और प्रशिक्षित कर्मचारियों की भारी कमी है। नतीजतन, फाइलें ढूंढने, कागज़ात तैयार करने और आदेश दर्ज करने में अनावश्यक विलंब होता है।

कहा जाता है कि भारत में सबसे अधिक मुकदमें सरकार की तरफ से दर्ज होते हैं या गलत सरकारी निर्णयों के कारण दर्ज होते हैं इसलिए अदालतों में मुकदमों की इतनी अधिकता नज़र आती है। अदालतों में लंबित मुकदमों का बड़ा हिस्सा सरकार बनाम नागरिक वाले मामले होते हैं। कर, ज़मीन अधिग्रहण, सेवा विवाद, या अन्य प्रशासनिक निर्णयों के खिलाफ नागरिक अदालतों का रुख करते हैं। सरकार अपील दर अपील करती रहती है, जिससे मुकदमे वर्षों तक चल पड़ते हैं। निचली अदालतों में सरकारी वकीलों की अनुपस्थिति या उनकी तैयारी की कमी भी देरी को बढ़ाती है। सरकारी वकीलों की तैयारी की कमी की टिप्पणियां अदालती फैसलों में भी आती रहती है। न्यायिक संस्कृति और मानसिकता की दृष्टि से देखें तो भारतीय न्याय व्यवस्था में यह मानसिकता अब भी गहरी है कि "सभी पक्षों को पूरा अवसर मिलना चाहिए।" यह सिद्धांत सही है, लेकिन कई बार इसी के नाम पर बार-बार सुनवाई टाल दी जाती है। पश्चिमी देशों में मामलों की समयबद्ध सुनवाई होती है और अदालतें एक निश्चित समयसीमा में फ़ैसला देने को बाध्य होती हैं। भारत में ऐसी सख्ती का अभाव है।

न्याय में देरी के दुष्परिणाम पर कम ही विचार हुआ है। न्याय अर्थहीन हो जाता है जब फैसला आने में बीस-बीस साल लग जाते हैं। तो कई बार जब पीडि़त पक्ष ही जीवित नहीं रहता है तब फैसला केवल कागज़ी महत्व का रह जाता है। इसीलिए लोग अदालतों से निराश होकर न्याय के लिए अन्य रास्ते अपनाने लगते हैं। यह लोकतंत्र और विधि के शासन के लिए खतरनाक होता है। लंबी मुकदमेबाजी गरीब और मध्यम वर्ग को आर्थिक रूप से तोड़ देती है। वकीलों की फीस, तारीख़ पर आने-जाने का खर्च और समय की बर्बादी लोगों को हतोत्साहित करती है जब मामलों का निपटारा देर से होता है, तो अपराधियों को छूट मिल जाती है। गवाह थक जाते हैं, सबूत कमजोर पड़ जाते हैं और दोषी बरी हो जाते हैं। इस गंभीर समस्या से निपटने के लिए बहुआयामी सुधार आवश्यक हैं। आबादी और मुकदमों के अनुपात में न्यायाधीशों की नियुक्ति की जाने की जरूरत है। तकनीकी सशक्तिकरण के लिए निचली अदालतों में ई-फाइलिंग और वर्चुअल हियरिंग को व्यापक स्तर पर लागू करने के लिए उन्हें पूरी तरह डिजिटल बनाया जाने की आवश्यकता है। इसके अलावा हर प्रकार के मुकदमे के लिए एक निश्चित समय सीमा तय होनी चाहिए, ताकि तारीख़ पर तारीख़ देने की प्रवृत्ति खत्म हो। सरकार को हमेशा अपील करो की नीति छोड़नी चाहिए। केवल गंभीर और महत्त्वपूर्ण मामलों में ही अपील की जाए। छोटे-मोटे विवादों को अदालत में लाने के बजाय लोक अदालत, मध्यस्थता और पंचायती व्यवस्था से सुलझाया जाने को बढ़ावा देना भी आवश्यक है। जानबूझकर मुकदमे लटकाने वालों पर जुर्माना लगाने की व्यवस्था की भी अनेक लोग सिफ़ारिश करते हैं। गवाहों को सुरक्षित और सहज वातावरण देना भी जरूरी है ताकि वे समय पर आकार अदालत में गवाही दे सकें।

तारीख़ पर तारीख़ का दर्द केवल किसी फिल्मी संवाद की सच्चाई नहीं है, बल्कि भारत के करोड़ों नागरिकों का जीता-जागता अनुभव है। न्याय में यह विलंब लोकतंत्र की बुनियाद को कमजोर करता है। न्यायपालिका को अब ऐसे ठोस कदम उठाने होंगे जिससे कि हर नागरिक को समय पर और निष्पक्ष न्याय मिल सके। न्याय देर से मिलना, न्याय न मिलने के बराबर है। निचली अदालतों में लंबित मामलों के बोझ और तारीख़ पर तारीख़ की संस्कृति को खत्म करना ही होगा। यही सच्चे लोकतंत्र और विधि के शासन की कसौटी है।

–अतिथि संपादक,
राजेन्द्र बोड़ा
(वरिष्ठ पत्रकार एवं विश्लेषक)

मैनेजमेंट के आदि गुरु की विभिन्न मुद्राओं के अंदर छिपा है जीवन को सुखमय मनाने का रहस्य

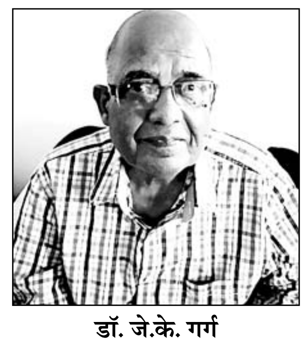

डॉ. जे.के. गर्ग

गणेश में गण का अर्थ है वर्ग और समूह और ईश का अर्थ है स्वामी अर्थात जो समस्त जीव जगत के ईश हैं वहीं देवों के देव भगवान गणेश ही है। इसलिए उन्हें गणाध्यक्ष, लोकनायक गणपति के नाम से भी जाना जाता है। गणेशजी की चार भुजाएं चारों दिशाओं में सर्वव्यापकता की प्रतीक हैं। शिव मानस पूजा में श्री गणेश को प्रणव (ॐ) कहा गया है। इस एकाक्षर (ॐ ब्रह्म में ऊपर वाला भाग गणेश का मस्तक, नीचे का भाग उदर, चंद्रबिंदु लड्डू और मात्रा सूँड है)। विघ्नहर्ता गणेशजी की व्याख्या करने से स्पष्ट होता है कि गज दो व्यंजनों से यानि ग एवं ज से बना हैं, यहाँ अक्षर जन्म और उद्गम का परिचायक है वहीं ग गति और गन्तव्य का प्रतीक है। निसंदेह हमें गज से जीवन की उत्पति और अंत का संदेश मिलता है यानि हमारे नश्वर शरीर को जहाँ से आया है वहीं पर वापस जाना है। निसंदेह जहाँ जन्म है वहां म्रत्यु भी है। सच्चाई तो यही है कि विनायक गणेशजी के शरीर की शारीरिक रचना के भीतर भोले शंकर शिवजी की सूक्ष्म सोच निहित है, भगवान शिव ने गणेशजी के अंदर न्यायप्रिय, योग्य, कुशल एवं सशक्त शासक के समस्त गुणों के साथ उनके अंदर देवों के सम्पूर्ण गुण भी समाहित किये हैं।

गणेशजी की मूर्ति का विसर्जन क्यों किया जाता है ?

भाद्र शुक्ल चतुर्थी को गणेशजी की मूर्ति की स्थापना ढोल-नगाड़े के साथ घरों में जाती है। भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी से अगले 10 दिन के बाद देश के विभिन्न प्रान्तों में गणपति बप्पा मोरिया, मंगल मूर्ति मोरिया, अगले बरस तू जल्दी आना के नारों के साथ गणपति की मूर्ति का विसर्जन हर्षोल्लास के साथ सरोवरों में किया जाता है। धार्मिक मान्यताओं के मुताबिक भाद्रपद शुक्ल चतुर्थी से अगले 10 दिन तक गणपति को वेद व्यास जी ने भागवत कथा सुनाई थी। गणेश जी की शर्त थी कि महर्षि एक क्षण के लिए भी कथावाचन में विश्राम ना लेंगे। यदि वे एक क्षण भी रूके, तो गणेश जी वहीं लिखना छोड़ देंगे। महर्षि ने उनकी बात मान ली और साथ में अपनी भी एक शर्त रख दी कि गणेश जी बिना समझे कुछ ना लिखेंगे। हर पंक्ति लिखने से पहले उन्हें उसका मर्म समझना होगा। गणेश जी ने उनकी बात मान ली। इस कथा को गणपति जी ने अपने दाँत से लिखा था। दस दिन तक लगातार कथा सुनाने के बाद वेद व्यास जी ने जब आंखें खोली तो पाया कि लगातार लिखते-लिखते गणेश जी के शरीर का तापमान काफी बढ़ गया है। महर्षि वेद व्यास जी ने गणेश जी को आदेश दिया कि वो तुरंत पास के कुंड में डुबकी लगा कर अपने आप को ठंडा कर लें। अत: इसी मान्यता के अनुसार गणेशजी की मूर्ति का विसर्जन किया जाता है।

हाथ में अंकुश: -गणेशजी का अंकुश हमें अपने लक्ष्य की और केन्द्रित रहते हुए हमेशा आगे बड़ने का पाट पढ़ाता है। मनुष्य को अपना लक्ष्य प्राप्त करने के लिये सतत प्रयास करते हुवे निरंतर आगे बढ़ना ही होगा। गणेशजी के हाथ में अंकुश हम सभी को भौतिकता से आध्यात्मिकता की तरफ चलने की शिक्केषा भी देता है।

आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ : निर्सविवाद रूप से जीवन में हमेशा जीत उन व्यक्तियों की होती है जो परिस्थतियों के अनुसार अपने आप को परिवर्तित करके आगे बड़ते हैं। गणेशजी के आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ हमें परिस्थतीयों के अनुसार खुद को ढालने की क्षमता विकसीत करने की सीख देता है। अत: भगवान गणेशजी का आशीर्वाद की मुद्रा में हाथ हमको उच्च कार्यक्षमता और अनुकूलन क्षमता प्राप्त करने की प्रेरणा देता है।

चूहे की सवारी: सभी देवी-देवता गणेशजी की बुद्धिमता के कायल हैं, तर्क-वितर्क में हर देवी-देवता गणेशजी से हार जाते थे। प्रत्येक समस्या के मूल में जाकर उसकी मीमांसा एवं विवेचना कर उसका तर्कसंगत हल खोजना उनकी विशेषता है इसलिए हर एक के मन में यह सवाल उठना लाजमी है कि भगवान गणेशजी ने निकृष्ट माने जाने वाले चूहे (मूषक) को ही अपना वाहन क्यों चुना? इसी सन्दर्भ में यह भी उल्लेखनीय है कि चूहा भी तर्क-वितर्क में किसी से पीछे नहीं रहता है, चूहे का काम हर किसी भी वस्तु को कुतर डालना है। जो भी वस्तु या चीज चूहे को दिखाई देती है, चूहे महाराज उसकी चीर फाड़ करके उसके प्रत्येक अंगो का विस्तृत विश्लेष्ण सा कर देते है, अत: संभवत गणेशजी ने चूहे के इन्हीं गुणों को देख कर चूहे को अपना वाहन चुना होगा। गणेशजी की चूहे की सवारी के बारे में यह भी कहा जाता है कि जैसे चूहे की इच्छा कभी पुरी नहीं होती, उसे कितना मिले हमेशा खाता रहता है वैसे ही मनुष्य की इच्छायें भी कितना भी मिले कभी पुरी नहीं होती क्योंकि लोभी आदमी का लालच कभी भी नहीं खत्म होता है। गणेश हमेशा चूहे की सवारी करते हैं इसका अर्थ है कि बेकाबू इच्छायें हमेशा विध्वंस का कारण बनती है। इनको काबू में रखते हुए इन पर राज करो, न कि इन इच्छाओं के मुताबिक खुद को उनमें लिप्त हो जा हो क्योंकि मनुष्य की इच्छायें और कामनाएं कभी भी पूरी नहीं होती है वरन आदमी इच्छाओं के मकड जाल में फसं कर असंतुष्ट तनावग्रस्त और दुखी रह कर अपने जीवन को बर्बादी के कगार पर ले आता है। अत: निसंदेह गणेशजी की चूहे की सवारी इन्सान की कभी भी पूरी नहीं होने वाली इच्छाओं का परिचायक है।

खड़े होने का भाव: गणेशजी की यह अवस्था बताती है कि दुनिया में रहते हुए मनुष्य को सांसारिक कर्म भी करने जरूरी है। वस्तुत: इन सबमें एक संतुलन बनाये रखते हुए उसे अपने सभी अनुभवों को परे रखते हुए अपनी आत्मा से जुड़े रखना चाहिए और अपने जीवन को आध्यात्मिकता सेजोड़ कर अंतर मुखी बनना चाहिए।

हाथी का सिर : इस कहावत से हम सभी परिचित हैं कि बड़ा सिर सरदार और बड़ा पांव गवांर का गणपति का बड़ा सिर खुशहाल जीवन जीने के लिये इंसान के अन्दर मौजूद असीमित बुद्धिमत्ता का प्रतीक है, वहीं विनायक के बड़े कान अधिक ग्राह्यशक्ति के प्रतीक हैं। गजानन लंबोदर हैं क्योंकि समस्त चराचर सृष्टि उनके उदर में ही विचरती है। हम लोगों यह भी जानना चाहिए कि गणपति के बड़े कान उनकी सर्वाधिक ग्राह्य शक्ति को दर्शाती है गजकर्णक की लंबी नाक (सूंड) महा बुद्धित्व का प्रतीक है।

विनायक का एक दंत:- विनायक का एक दंत: यह बतलाता है कि अच्छाई और अच्छों को अपने पास

रक्खो वहीं बुराई और बुरों का साथ तुरंत छोड़ दो। गणेशजी के बाई तरफ का दांत टूटा है। इसका एक अर्थ यह भी है कि मनुष्य का दिल बाई और होता है, इसलिए बाई और भावनओं का उफान अधिक होता है, जबकि दाई और बुद्धीपरक होता है। बाई और का टूटा दांत इस बात का प्रतीक है कि मनुष्य को हमेशा अपनी भावनाओं पर बुद्धि और विवेक से नियन्त्रण रखना चाहिए। छोटी आँखें: गणेशजी की छोटी-पैनी आँखें हमें सिखाती है कि हमें सूक्ष्म एवं तीक्ष्ण दृष्टि वाला बनना चाहिये। सफलता प्राप्ति के लिये आदमी को एकाग्र चित्त बन कर अपना ध्यान हमेशा अपने लक्ष्य पर केंद्रित रखते हुए अपने मन पर नियंत्रण रखना चाहिए और मन को इधर-उधर भटकने से रोकना चाहिये। बड़ा पेट: विघ्ननाशक गणेश जी का बड़ा पेट हमें सिखाता है कि मनुष्य को अच्छी-बुरी सभी बातों-भावों को समान भाव से ठाहण करना चाहिए, उन्हें समान भाव से लेना चाहिये। दूसरे शब्दों में गणेशजी का बड़ा पेट मनुष्य को उदार आदतों का धनी बनने की सीख देता है। जीवन में कुछ बातों को पेट में पचा लेना चाहिये। धीर और गम्भीर पुरुषों का समाज में सम्मान होता है।

क्यों सिर्फ माता पिता के चरणों में ही बसता है समस्त संसार?

एक बार देवता अनेकों आपदाओं में घिरे हुए थे, तब वे मदद मांगने भगवान शिव के पास आए। देवताओं की बात सुनकर शिवजी के दोनों पुत्रों कार्तिकेय व गणेशजी ने शिवजी से देवताओं की मदद करने की आज्ञा मांगी, तब भगवान शिव ने दोनों की परीक्षा लेते हुए कहा कि तुम दोनों में से जो सबसे पहले पृथ्वी की परिक्रमा करके आएगा वही देवताओं की मदद करने जा सकेगा। भगवान शिव के मुख से यह वचन सुनते ही कार्तिकेय तो अपने वाहन मोर पर बैठकर पृथ्वी की परिक्रमा के लिए निकल गए। किन्तु गणेशजी सोच में पड़ गए कि वह चूहे के ऊपर चढ़कर सारी पृथ्वी की परिक्रमा करेंगे तो इस कार्य में उन्हें बहुत समय लग जाएगा। तभी गणेशजी को एक उपाय सूझा। गणेश अपने स्थान से उठें और अपने माता-पिता की सात बार परिक्रमा करके वापस बैठ गए।

विघ्नहर्ता गणेश जी एक मुद्रा में कलिंग सांप के फन के ऊपर नृत्य कर रहे हैं। यह बुराई पर अच्छाई की जीत दर्शाता हैं। अपने इस स्वरूप में भगवान गणेश कलियुग के उन लोगों की सहायता करते हैं जो अपने अच्छे कर्मों के बावजूद, समस्याओं को झेल रहे हैं। अलिंग अपने इस स्वरूप में भगवान गणेश कलिंग नामक सांप के फन के ऊपर नृत्य कर रहे हैं। यह बुराई पर अच्छाई की विजय को दर्शाता। बुद्धि ऋद्धि सिद्धि सुख स्वास्थ्य सम्पन्नता को देने वाले देव देवों गणपति भगवान के श्री चरणों मे कोटि कोटि प्रणाम। 27 अगस्त 2025 को देश प्रथम पूज्य भगवान विनायक का जन्मोत्सव हर्षोल्लास के साथ मना रहा है।

-डॉ. जे.के गर्ग,
पूर्व संयुक्त निदेशक कालेज शिक्षा जयपुर

मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल अजमेर में साहित्यिक महाकुंभ के चौदहवें संस्करण का समापन

साहित्यिक प्रतियोगिता में देशभर से 22 विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों से लगभग 250 प्रतिभागियों ने प्रतिभा और कौशल का प्रदर्शन किया

जयपुर/अजमेर। अजमेर स्थित मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल में चार दिवसीय साहित्यिक महाकुम्भ रजत जयंती स्मृति युवा विचारक सम्मेलन-2025' कार्यक्रम का समापन समारोह आयोजित हुआ। इस साहित्यिक प्रतियोगिता में देशभर से 22 विभिन्न प्रतिष्ठित संस्थानों से लगभग 250 प्रतिभागियों ने रजत जयंती स्मृति अन्तर्विद्यालयीय हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता विचारवाणी, हिंदी सृजनात्मक स्वरचित काव्य पाठ प्रतियोगिता सृजन अभिव्यक्ति: मन की उड़ान, इंग्लिश एनैक्ट्मन्ट / ड्रामाटिक्स, मल्टी फॉर्मेट इंग्लिश डिबेट, इंग्लिश सृजनात्मक लेखन, सामान्य क्विज़ जैसी विविध प्रतियोगिताओं में अपनी प्रतिभा और कौशल का प्रदर्शन किया।

कार्यक्रम में मेयो एल्युमनाई एसोसिएशन, जयपुर चैप्टर के अध्यक्ष एवं जनसंपर्क विशेषज्ञ, जगदीप सिंह मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। उन्होंने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता और उपविजेताओं टीमों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया। इस अनूठे कार्यक्रम को प्रसिद्ध शिक्षाविद् प्रणब मुखर्जी ने क्यूरेट किया। समापन समारोह पर मुख्य अतिथि जगदीप सिंह ने अपने संबोधन में विद्यालय की प्राचार्या, प्रबंधन तथा कार्यक्रम के संयोजकों के प्रति आभार प्रकट किया और कहा कि मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल सदैव उत्कृष्टता और मानवीय मूल्यों का प्रतीक रहा है। उन्होंने कहा कि शिक्षा केवल करियर की तैयारी नहीं है, यह जीवन की तैयारी है। सदैव जिज्ञासु और रचनात्मक बनें।

जॉन लेनन का उदाहरण देते हुए उन्होंने यह भी कहा कि चाहे आप पायलट बनें, इंजीनियर या उद्यमी बनें, अपने भीतर की मानवीयता को कभी न खोएं। सदैव प्रसन्न रहें और जीवन को समझने का प्रयास करें।

इस चार दिवसीय प्रतियोगिताओं का परिणाम इस प्रकार रहा :-हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता का विजेता मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल अजमेर रहा। हिंदी सृजन-अभिव्यक्ति: मन की उड़ान स्वरचित काव्य रचना और अभिनय के विजेता मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल, अजमेर से जाह्नवी सोमानी और छवि सिंह रहे।

मल्टी फॉर्मेट अंग्रेजी डिबेट प्रतियोगिता में बेस्ट डेलिगेशन के साथ मेयो कॉलेज, अजमेर विजेता रहा। अंग्रेजी सृजनात्मक लेखन प्रतियोगिता में बेस्ट डेलिगेशन अवॉर्ड सनबीम स्कूल, लहरतारा ने जीता। इंग्लिश एनैक्ट्मन्ट/ड्रामाटिक्स में बेस्ट डेलिगेशन ट्रॉफी बिरला विद्या मंदिर, नैनीताल ने जीती। वहीं, सामान्य क्विज़ में ओवरऑल बेस्ट डेलिगेशन में के सी पब्लिक स्कूल जम्मू विजेता रहा।

इस अवसर पर स्कूल की प्राचार्या नीति भल्ला सैनी ने सभी प्रतिभागी विद्यालयों को बधाइयां एवं शुभकामनाएं दीं। उन्होंने कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए धन्यवाद ज्ञापित करते हुए अपने संबोधन में आत्म-चिंतन के महत्व पर जोर दिया, जिससे हम खुद के भीतर झांक सकें, विचार कर सकें और सभी प्रकार के कौशलों में कई गुना वृद्धि कर सकें।

मेयो कॉलेज गर्ल्स स्कूल अजमेर में रजत जयंती स्मृति युवा विचारक सम्मेलन-2025 संपन्न हुआ।

- **वाद-विवाद, काव्य पाठ, ड्रामाटिक्स, सामान्य क्विज़ आदि प्रतियोगिताओं का आयोजन हुआ**
- **समारोह में अतिथियों ने विभिन्न प्रतियोगितां के विजेता और उपविजेता टीमों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया**

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

बुधवार 27 अगस्त, 2025

भाद्रपद मास, शुक्ल पक्ष, चतुर्थी तिथि, बुधवार, विक्रम संवत 2082, चित्रा नक्षत्र गुरूवार प्रात: 8:44 तक, शुभ योग दिन 12:34 तक, विष्टि करण दिन 3:45 तक, चन्द्रमा सायं 7:21 से तुला राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-सिंह, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कन्या, बुध-कर्क, गुरू-मिथुन, शुक्र-कर्क, शनि-मीन, राहु-कुम्भ, केतु-सिंह राशि में।

आज भद्रा दिन 3:45 तक है। आज महागणपति चतुर्थी है। शास्त्रों के अनुसार गणेश पूजन का श्रेष्ठ समय दिन 11:13 से दिन 1: 45 तक रहेगा। दिन 12:11 से दिन 1:45 तक वृश्चिक लग्न और भी श्रेष्ठ रहेगा। आज जैन संवत्सरी (चतुरथी पक्ष) है। आज से गणेश महोत्सव आरम्भ होगा।

श्रेष्ठ चौघड़िया: लाभ-अमृत सूर्योदय से 9:18 तक, शुभ 10:53 से 12:28 तक, चर 3:39 से 5:14 तक, लाभ 5:14 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 12:00 से 1:30 तक। सूर्योदय 6:08, सूर्यास्त 6:49

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिलेगी। स्वास्थ्य संबंधित चिन्ता दूर होगी। धार्मिक-मांगलिक कार्यों पर धन खर्च हो सकता है।

वृष
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

मिथुन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी।

सिंह
आर्थिक/वित्तीय मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा। व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। व्यावसायिक कार्यों के लिए भागदौड़ रहेगी।

कन्या
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मन:स्थिति में सुधार होगा। घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक आर्थिक मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

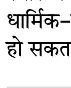

तुला
व्यावसायिक खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। नौकरीपेशा व्यक्तियों को मानसिक तनाव बना रहेगा। घर-परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है।

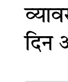

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में उचित सफलता मिल सकती है।

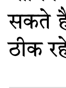

धनु
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

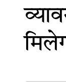

मकर
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

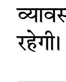

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

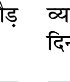

मीन
घर-परिवार में धार्मिक-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।